THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

हिंसा को कम करना
De-escalating violence

Author – James Spencer

Christian Science Sentinel Volume 116, Issue 52, Dec 29, 2014

हाल ही में मैंने एक सुबह, प्रार्थना में संसार को अपनी बाहों में समेटने की ममतामयी अनुभूति अनुभव की। मैंने, करुणा भरी देखभाल और सुरक्षा के लिए पुकारती हुई पीड़ित मानवजाति की सख्त ज़रूरत को महसूस किया। प्रतिदिन की खबरें हिंसक अपराधों, दुष्ट व्यवहार, आतंकवाद, और कबीले की लड़ाइयों की नई सूचनाओं से भरी होती थीं। कोई भी निष्प्रभावित दिखाई नहीं देता था: न कोई बच्चा, न कोई वयस्क, न कोई जाति, न कोई धर्म। हर जगह मुख्य समाचार डंका बजा रहे थे: "बढ़ती हुई हिंसा"।

ठीक उसी समय, जिस ममतामयी आग्रह को मैंने कब से दिव्य प्रेम की, माता-पिता प्रेम की या परमेश्वर की अभिव्यक्ति माना था, वह मुझे हिंसा को कम करने में और अधिक सक्रिय होने के लिए पुकार रहा था। मैंने महसूस किया कि एक संभावित दुर्घटना के बाद न केवल सांतवना के लिए हल निकालने की ज़रूरत थी अपितु इससे भी अधिक महत्वपूर्ण, इस तरह की घटना को शुरू में ही होने से रोक देने वाली समझ की अनकही इच्छा को शांत करने के लिए एक तरीके की ज़रूरत थी,-एक पुकार, केवल घाव को भरने के लिए ही नहीं अपितु एक अभेद्य बचाव कवच को प्रदान करने के लिए ताकि घाव देने वाला कोई अवसर ही न हो। इसकी ज़रूरत बिलकुल स्पष्ट है जब हम हिंसा के जाल में फँसे अपने पीड़ित बच्चों के लिए शोक मनाती हुई माताओं की तस्वीरें देखते हैं।

आम तौर पर संसार अत्याधिक देखभाल के साथ प्रतिक्रिया करता है जब वह नफरत और क्रोध के कारण हुए बुरे कार्यों के भयंकर प्रभावों को नियंत्रित करने और सुधारने के लिए प्रयत्न करता है। परन्तु एक इससे भी ऊँचा लक्ष्य है, द्वेष के इन कार्यों को पहले ही रोक देना, इनका खुलासा करना और इन्हें खत्म कर देना, इससे पहले कि अपराधकर्ता अपने गलत उद्देश्यों को अंजाम दे सकें। हमारे साहसी, सबसे पहले प्रतिक्रिया करने वाले, एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। परन्तु उससे भी बेहतर होगा सचेत "पूर्व निवारकों" का होना, दिव्य सिद्धांत, प्रेम के सक्रिय कानून को प्रत्यक्षीकृत करने के लिए जो कि नुकसान और तबाही मचाने के प्रयास का पर्दाफाश करता है, उसे निष्फल करता है, और नष्ट कर देता है। क्रिश्चियन साँयस की पाठ्य पुस्तक साँयस एण्ड हैल्थ विद की टू द स्क्रिप्चर्स में मेरी बेकर एडी लिखती हैं, "साँयस त्रुटि को निष्फल करती है और नष्ट भी कर देती है" (पृष्ठ 157)।

नफरत, अनैतिकता, आतंकवाद को नाकाम और नष्ट करने के लिए आखिर दिव्य प्रेम व्यावहारिक रूप से संचालित होता कैसे है? वह कैसे संचालित होता है कि वे कार्यान्वित न हो पाएँ?

---

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2016 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

दिव्य **प्रेम**, केवल एकमात्र **परमेश्वर**, अनन्त है, सारी जगह को भरते हुए। यह अनन्त **प्रेम** समस्त अच्छाई है। इसकी सर्वस्वता की व्यापकता में, इसके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। सर्वव्यापी, सर्व क्रियाशील अच्छाई केवल अपनी स्वयं की सम्पूर्णता को जानती है, और थोड़ी सी भी असम्पूर्णता की जानकारी नहीं रख सकती। क्योंकि यह बिलकुल यहीं और अभी **प्रेम** का परम, अपरिवर्तनशील सत्य है, यह कानून है।

प्रेम के इस कानून के संचालन में सरहदें और दीवारें मायने नहीं रखती। यह इन्सानी चेतना में और इन्सानी दृश्य में संचालन करता है। जैसे प्रकाश केवल प्रकाश होते हुए अंधेरे को दूर कर देता है, उसी तरह प्रेम– केवल **प्रेम** होते हुए अपने काल्पनिक विरोधी का खुलासा करता है और उसका पूर्णतः उन्मूलन कर देता है। केवल एक व्यक्ति द्वारा **प्रेम** के इस कानून की समझ और इसका उपयोग, भूमण्डल के अंतिम छोर तक पहुँच सकता है और सबसे गहरी, सबसे अंधकारमयी अनैतिकता को भेद सकता है, उसे **प्रेम** की इस सर्वशक्ति की उपस्थिति में अपने बुरे इरादे का आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर करते हुए।

प्रेम के कानून के संचालन में सरहदें और दीवारें मायने नहीं रखती। यह इन्सानी चेतना में और इन्सानी दृश्य में संचालन करता है।

वह हमारे स्वामी, क्राइस्ट जीसस थे, जिन्होंने अंतिम रूप से और सदा के लिए प्रमाणित किया था कि निर्दयी, अवैध नफरत के लिए अंतिम उत्तर अटल **प्रेम** का परम कानून है, जो कि बुराई की दुष्टता का खुलासा करता है और उसे नष्ट कर देता है, इस प्रकार से बुराई की अवास्तविकता को प्रमाणित करते हुए।

समस्त अनैतिकता और अपराजित अच्छाई के बीच कड़े विभाजन का स्वामी द्वारा सदा–सर्वदा के लिए व्याख्यान किया गया था, जिन्होंने पोंटियस पाएलट से कहा था, "तुम्हारे पास मेरे विरुद्ध कोई भी शक्ति नहीं हो सकती, जब तक कि वह तुम्हे ऊपर से न दी जाए" (यूहन्ना 19:11)। उन्होंने बुराई की सभी योजनाओं पर विजय प्राप्त करने के लिए अचूक **प्रेम** की व्यवहारिकता को प्रमाणित किया। अपने बिना शर्तो के प्रेम के सम्पूर्ण प्रत्यक्षीकरण के प्रमाण में उन्होंने यहाँ तक कि अपने उत्पीड़कों के लिए भी प्रार्थना की, यह घोषणा करते हुए, "पिता जी, उन्हें माफ कर दो क्योंकि वह नहीं जानते कि वह क्या कर रहे हैं" (लूका 23:34)। बुराई जो सबसे बुरा करने का प्रयास कर सकती थी, उन्होंने उसके आगे इच्छा–पूर्वक समर्पण कर दिया, ताकि वह दूसरों के समक्ष इसके दावों को नाकाम करने के तरीके को प्रत्यक्षीकृत कर सकें। अपने प्रतिदिन के काम–काज में वह अपने दुश्मनों के हाथों से बार–बार बचे क्योंकि वह उनके विचारों को जानते थे, पहले ही खतरे को भाँप लेते थे, और स्वयं को खतरनाक रास्ते से हटा लेते थे।

वास्तव में, **परमेश्वर**, दिव्य **मन** बुराई के साथ संघर्ष नहीं करता, क्योंकि सदा–उपस्थित, सर्व–शक्तिमान **मन**–समस्त अच्छाई– सर्वस्व तथा अद्वितीय होते हुए, अपने अतिरिक्त और किसी को अनुमति नहीं देता। दिखाई देने वाला संघर्ष केवल इन्सानी चेतना में घट रहा होता है। असल में, जो नश्वर मन को जड़ से मिटा देता है, उस दिव्य **प्रेम** के प्रति नश्वर मन के भारी विरोध के कारण इन्सानी चेतना युद्ध भूमि बन जाती है। हमारे लिए चुनौती है, भौतिकता में मन के मत को त्यागने के लिए इच्छुक होने की, दिव्य **मन**, सम्पूर्ण **प्रेम** की सर्वस्वता को समर्पण करने की, और नवीनीकरण की। क्रिश्चियन साँयस की पाठ्य पुस्तक में श्रीमति एडी वर्णन करती हैं: "नश्वर मन में अंतर्निहित और अत्याचार के नए तरीकों में सदा उत्पन्न होती हुई निरंकुश प्रवृत्तियों को दिव्य **मन** की क्रिया द्वारा जड़ से उखाड़ फेंकना होगा" (साँयस एण्ड हैल्थ, पृष्ठ 225)।

Translation © 2016 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

नबी पॉल ने घोषित किया, "हमारे पास क्राइस्ट का मन है" (I कुरिन्थियों 2:16)। जीसस की शिक्षाओं को आत्मसात करके और उनके शुद्ध प्रेम तथा अच्छाई के उदाहरण का अनुसरण करने की अपनी योग्यता को बढ़ा कर हम दिव्य **मन** के साथ अपनी स्वयं की एकजुटता को खोजते हैं और समझते हैं। समय और स्थान की सीमाएँ उस **मन** को कभी नहीं छूतीं। इसलिए, जितने अनुपात में हम **मन** के साथ अपनी एकजुटता को जीते हैं, जितना हम **मन** के साथ अपनी सोच को थामे रखते हैं, हम उन सीमाओं से मुक्त हो जाते हैं। हम वर्तमान और भविष्य की अनदेखी घटनाओं के प्रति जागरूक हो जाते हैं तथा सही निर्देश प्राप्त करते हैं जो कि हमें खतरे की पूर्व सूचना देता है और हमें सुरक्षा की ओर ले जाता है। हम वर्तमान के "पूर्व निवारक" बन जाते हैं।

कुछ वर्ष पहले, कई महीनों के लिए मैं लेटिन अमेरिका के एक देश में भाषण देने के लिए यात्रा पर गया था, जो कि हिंसक राजनैतिक हलचल अनुभव कर रहा था। एक गुट सार्वजनिक स्थानों पर विस्फोट करने के लिए कहीं–कहीं बम्ब लगा रहा था। मैंने प्रतिदिन दिव्य **सिद्धांत** को कार्य करते हुए देखने के लिए प्रार्थना की, जो हर एक को और हर चीज़ को संचालित करता है। एक सुबह, यह प्रबल रक्षक विचार मुझे बहुत स्पष्ट रूप से मिला: "मैं किसी संयोग, अवस्था, परिस्थिति, किस्मत, आँकड़ों, व्यक्ति, जगह, या वस्तु द्वारा संचालित नही हूँ। मैं **परमेश्वर** के सही मार्गदर्शन के अचूक कानून द्वारा संचालित हूँ।" जब मैं गलियों से गुज़रता था मुझे अपना रास्ता और समय बदलने की प्रेरणा मिलती थी। कई बार एक बम्ब उससे पहले या बाद में फटता था जब मैं एक विशेष स्थान पर होता था। और उस समय के दौरान, न केवल मैं सुरक्षित होता था अपितु और किसी को भी कोई हानि नहीं पहुँचती थी।

हिंसा को कम करना केवल एक संभावित लक्ष्य नहीं है। यह एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है जो कि साहस, प्रेम, और दृढ़ता की माँग करती है। साँयस एण्ड हैल्थ एक स्पष्ट मार्गदर्शिका उपलब्ध करवाती है, "इसे अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए कि सभी इन्सानों का एक **मन**, एक **परमेश्वर** और **पिता**, एक **जीवन**, **सत्य** तथा **प्रेम** है" (पृष्ठ 467)। मैं इस नुक्ते को परम सत्य की तरह देखता हूँ जो कि, वास्तव में, मानव तथा ब्रह्माण्ड को संचालित करता है। और मैं इस तथ्य को समझने के व्यवहारिक प्रभावों को इसके एकदम बाद के कथन में देखता हूँ: "जितने अनुपात में यह तथ्य स्पष्ट होता है, मानवजाति सम्पूर्ण होती जाएगी, युद्ध थम जाएँगे और मानव का असली भाईचारा स्थापित हो जाएगा।"

संसार को निश्चित रूप से इस दिव्य **प्रेम** की ममतामयी देखभाल की, इस सर्वज्ञ **मन** की ज़रूरत है जो कि बुरे कार्यों की पूर्व सूचना देता है, उन्हें पहले ही रोक देता है, और अपनी सर्वशक्तिमान सर्वस्वता द्वारा, उन्हें नष्ट कर देता है।

Translation © 2016 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.